पुस्तक अंश

लिसबेत की नाक में मटर का दाना

अब सर्दियाँ आने को थीं, और हर गुरूवार मार्दी के घर में मटर का सूप बना करता था। लेकिन लिसबेत हर गुरूवार अपनी नाक में मटर का दाना थोड़े ही फँसाती थी। वो तो उसने बस पहली बार किया था। वैसे लिसबेत की बड़ी अजीब आदत थी, जो चीज़ जहाँ नहीं होनी चाहिए उसे वहाँ ठूँसने की। एक बार उसने अल्मा के कमरे की चाबी पोस्ट बॉक्स में डाल दी थी, और एक बार मम्मी की अँगूठी अपनी गुल्लक में डाल दी थी, ताकि उसे कोई छू न सके। एक दिन उसने पापा का टूथपेस्ट खाली बोतल में फँसा रखा था। वो यह सब शरारत में नहीं करती थी। वो तो सिर्फ जानना चाहती थी कि ऐसा करने से क्या होता है? चीज़ें कभी-कभी ऐसे फँस जाती थीं जैसे आपने कभी सोचा भी न हो, तब बड़ा मज़ा आता। अब भी ऐसा ही हुआ था। उसे रसोईघर में ज़मीन पर एक मटर का दाना गिरा पड़ा दिखा। न जाने क्या सोचकर उसने उसे तपाक से अपनी नाक में डाल लिया। उसे सिर्फ देखना था कि वह अन्दर जाता है या नहीं। वह चला गया। काफी अन्दर चला गया।

"मम्मी, मेरी नाक में मटर चला गया है, उसे निकाल दो! अभी, इसी वक्त! मुझे नहीं चाहिए।"

फिर उसने उसे बाहर निकालने की कोशिश की। उसका काम तो हो गया था। लेकिन वह मटर बाहर आने को तैयार नहीं था। वह जहाँ था, वहीं रुका रहा। लिसबेत ने अपनी उँगली काफी गोल-गोल घुमाई, पर वह बाहर नहीं आया। लिसबेत ने मार्दी से मदद माँगी। उसने भी कोशिश की, पर वह बाहर निकला नहीं।

"शायद उसने वहाँ जड़ पकड़ ली है," मार्दी ने कहा। अब देखना, जल्दी ही तेरी नाक से मटर निकलने लगेंगे।

सुनते ही लिसबेत चिल्लाने लगी। उसे मटर पसन्द तो थे पर उनका बेल पर उगना ही सही था, नाक से नहीं। उसकी अपनी नाक से तो बिल्कुल ही नहीं। वह चीखती-चिल्लाती मम्मी के पास गई।

"मम्मी, मेरी नाक में मटर चला गया है, उसे निकाल दो! अभी, इसी वक्त! मुझे नहीं चाहिए।"...

(माँ के सिर में दर्द था इसलिए उन्होंने दोनों को डॉक्टर के पास जाने को कहा।)

..."चलो मार्दी, जल्दी से जाएँ!" लिसबेत ने कहा। उसे लग रहा था, पता नहीं कब नाक से मटर उगने लगे और फलियाँ झूलने लगें। अगर यह डॉक्टर के पास पहुँचने से पहले ही हो जाता है तो लोग उसे सड़क पर चलते देख हँसने लगेंगे। मार्दी ने उसका साहस बढ़ाने की कोशिश की। मान लो ऐसा हो भी जाता है, तो भी आफत की कोई बात नहीं है।

"तब तुम उसे चुपचाप काट देना, जब कोई देख न रहा हो, और अपनी जेब में ठूँस देना!" मार्दी ने कहा। लिसबेत उन लड़कियों में से नहीं थी जो एक मटर को लेकर रोंदू की तरह बार-बार शिकायत करती रहती हैं। वह अब डॉक्टर के पास जा रही थी, और मटर समझ लो निकल ही चुका था। उसे इस बात की खुशी भी हो रही थी कि वह मार्दी के साथ बाज़ार जा रही थी। डॉक्टर का दवाखाना बाज़ार में था।

"मज़ा भी तो आएगा! आओ मार्दी, चलें!" लिसबेत ने कहा। डॉक्टर के दवाखाने तक का रास्ता लम्बा था। वह शहर के बीच चौक में था और मार्दी का घर गाँव से बाहर था।

मार्दी ने लिसबेत का हाथ अच्छी तरह पकड़ रखा था। मम्मी देखतीं तो खुश हो जातीं कि उनकी दो बेटियाँ कितने प्यार से और ज़िम्मेदारी से अपने आप डॉक्टर के पास जा रही थीं।

"तू कभी-कभी पागलों जैसी चीज़ें करती है!" मार्दी ने बड़ों की तरह अकलमन्दी दिखाते हुए कहा। घर में पागलों की तरह शरारतें करने के लिए सबसे ज़्यादा डाँट किसको पड़ती है, यह वह भूल गई थी। लेकिन लिसबेत के साथ इतनी दूर शहर जाना उसे अच्छा लग रहा था। उसने उसे और डाँट-फटकार नहीं सुनाई।

"तू कभी-कभी पागलों जैसी चीज़ें करती है!"

सड़क सूखे पत्तों से भरी पड़ी थी। उस पर चलने में मज़ा आ रहा था। पत्ते पैर के नीचे आते तो "कर्र कर्र" की आवाज़ आती। मार्दी और लिसबेत उन पर ज़ोर-ज़ोर से पैर जमाती चल रही थीं। उनके चेहरे लाल हो गए थे। हवा में ठण्डक थी। अब बगीचे में सारे फूल सूख गए थे। इससे भी लिसबेत को तसल्ली मिल रही थी। फूलों का, नए पौधों का मौसम खत्म हो रहा है, तो ज़ाहिर है कि अब मटर भी नहीं आएँगे।...

(रास्ते में इनकी प्यारी ईडा का घर पड़ता था। सो उनके घर पहुँचीं थे। ईडा का घर खुला था पर वो घर पर न थी। ये वहाँ बैठीं ही थीं कि...)

..."मैं अभी आई," मार्दी से कहकर लिसबेत वहाँ से निकल गई। लिसबेत बगीचे से निकलकर मैटी के घर की तरफ गई। मैटी के हाथ में एक छुरी थी जिससे वह लकड़ी के एक टुकड़े पर कुछ कर रही थी। उसने ऐसा जताया कि जैसे लिसबेत को देखा ही न हो। लिसबेत अच्छी बच्ची की तरह धीरे-धीरे उसके पास जाकर थोड़ी दूर खड़ी हो गई। वह मैटी के कुछ कहने का इन्तज़ार कर रही थी। मैटी ने उसे देखकर ज़ोर से कहा, "गन्दी बच्ची!" और वह लकड़ी के टुकड़े को तराशती रही।

लिसबेत को गुस्सा आया। अगर कोई गन्दा था तो वह मैटी थी, पता नहीं कब नहाई थी।

"तू ही है गन्दी बच्ची, सूअरनी!" लिसबेत ने कहा और फिर डर गई क्योंकि मैटी उससे बड़ी थी और तेज़ दिमागवाली और खतरनाक लग रही थी।

"एक झापड़ लगाऊँ तो उड़ जाएगी। लगाऊँ?" मैटी ने पूछा। लिसबेत चुप रही और पीछे हटकर अपनी जीभ निकालकर मैटी को चिढ़ाया। जवाब में मैटी ने भी जीभ निकालकर मुँह बनाते हुए कहा, "मेरे पास तो दो खरगोश हैं, तेरे पास कुछ नहीं। तेरे मुँह में कीड़े, तेरे मुँह में धूल।"

लिसबेत ने "तेरे मुँह में कीड़े, तेरे मुँह में धूल" पहले कभी नहीं सुना था। लेकिन अगर मैटी कह रही थी तो ज़रूर वह कोई लड़ाई-झगड़े की बात होगी। लिसबेत नए शब्द फटाक से सीख लेती थी।

"मेरे पास एक बिल्ली है, गूडी जो तेरे पास नहीं है, तेरे मुँह में कीड़े, तेरे मुँह में धूल," उसने कह डाला।

"हाँ, हाँ! बिल्ली चाहता कौन है? मुझे कोई मुफ्त में दे तो भी मैं न लूँ!" एक पल शान्ति रही। फिर मैटी और लिसबेत गुस्से से एक-दूसरे को देखती रहीं।

"मेरा एपेंडिक्स का ऑपरेशन हुआ है। मेरे पेट पर लम्बा निशान है। तेरे पास तो है नहीं! तेरे मुँह में कीड़े, तेरे..." यह लिसबेत के लिए काफी था। उसने जल्दी से सोचा। पेट पर निशान के मुकाबले के लिए उसके पास क्या था? हाँ, एक बात थी तो सही।

"मेरी नाक में मटर है, तेरे पास नहीं! तेरे मुँह में कीड़े...." मैटी ने तुच्छता से उसकी तरफ देखा और हँसकर बोली, "मटर? मेरे घर में इतने सारे मटर हैं कि मेरी नाक भर सकती है। उसमें कौन-सी बड़ी बात है?"

लिसबेत को अजीब-सा लगने लगा। "अगर वहाँ मटर की बेल उग जाती है...." लेकिन यह कहते हुए वह चुप हो गई। जो बेल उसे चाहिए नहीं थी उसके बारे में क्या डींगें हाँकना!

तभी लिसबेत ने देखा कि मैटी सीढ़ियों पर बैठी स्वेटर की बाँह पर नाक रगड़ रही है। यह देखते ही उसने कहा, "पता है क्या, तेरी नाक गन्द से इतनी भरी है कि उसमें मटर घुस ही नहीं सकते।" यह सुनकर मैटी का पारा चढ़ गया।

"अब दिखाती हूँ मैं, कि कौन क्या है!" वह चीखी और लिसबेत की तरफ दौड़ी। लिसबेत ने उसे मारकर खुद को बचाने की कोशिश की, पर मैटी में ताकत ज़्यादा थी। उसने लिसबेत को मुक्के मारे और हाथ पकड़कर उसे दीवार में

चीनने लगी। लिसबेत ने जितनी ज़ोर से हो सका, मार्दी को पुकारा, "मार्दी! मार्दी!"

लिसबेत इस तरह का व्यवहार क्यों बरदाश्त करती, जब उसके पास मार्दी जैसी बहन हो! मार्दी को लड़ना आता था। उसे गुस्सा आता था तो वह बगैर सोचे-समझे काफी कुछ कर बैठती थी। मम्मी जो मर्ज़ी है कहें, उस पर कोई असर नहीं होता था। "लड़कियों को मार-पीट कभी नहीं करनी चाहिए," मम्मी ने बता रखा था। लेकिन ऐसी बातें मार्दी को हमेशा बाद में, सब कुछ करने के बाद, याद आती थीं। उसके बाद वह फौरन पछताती थी, और सोच लेती थी कि फिर कभी नहीं लड़ेगी। लेकिन अब जब उसने देखा कि कोई उसकी बहन पर हमला कर रहा है तो वह चुप कैसे रह सकती थी। वह लड़ाई के लिए तैयार बकरे की तरह भागती वहाँ आ गई। देखते ही देखते उसने मैटी को ऐसा घूँसा रसीदा कि वह लड़खड़ाती हुए पीछे गिर गई।

"तेरे मुँह में कीड़े, तेरे मुँह में धूल!" लिसबेत ने कहा।

लेकिन मैटी की भी बड़ी बहन थी।

"मीता!" उसने पुकारा, "मीता!"

अब सोचो, वहाँ किसको आना था। वह तो मीता निकली, जो मार्दी की क्लास में पढ़ने वाली जूओं वाली लड़की थी।

मैटी ने मार्दी की तरफ इशारा कर कहा, "उसने मुझे मारकर गिरा दिया।"

"गन्दी सूअरनी, लड़ाई तूने शुरू की थी!" लिसबेत चिल्लाई। पर तब तक देर हो चुकी थी। मार्दी और मीता एक-दूसरे पर टूट पड़ी थीं।...

(इतने में ईडा वहाँ पहुँच गई। उन्हें पौंछा-पौंछा। कुछ खिलाया, गाने सुनाए। फिर घर जाने को कहा।)

...मार्दी को याद आया! मटर! डॉक्टर! पता नहीं वे कैसे भूल गई थीं कि वे घर से किस काम से निकली थीं!

"चल लिसबेत, चल जल्दी से, हमें तो डॉक्टर के यहाँ जाना था।" ईडा देखती रह गई।

"तेरे मुँह में कीड़े
तेरे मुँह में धूल!"
लिसबेत ने कहा।

"मेरा यह मतलब नहीं था कि तुम्हें भगा दूँ, रुको तो सही!" लेकिन अब मार्दी और लिसबेत कैसे रुकतीं! जैसे-तैसे जूते पहनकर वे भागने लगीं। पाँच मिनट में वे डॉक्टर के पास पहुँच गईं। मार्दी की नाक से खून आने लगा था। जब डॉक्टर ने उन्हें देखा, तो एक अजीब-सी सूरत नज़र आई।

"हे भगवान!" उनके मुँह से निकला। "कहीं तुम किसी से लड़-झगड़कर तो नहीं आई हो?"

"क्या ऐसा लग रहा है?" मार्दी ने पूछा।

"हाँ!" डॉक्टर ने कहा। वे ठीक ही कह रहे थे। मार्दी की नाक सूजकर एक लाल आलू जैसी नज़र आ रही थी। डॉक्टर ने उन दोनों की तरफ देखते हुए कहा, "मुझे लगा था कि लिसबेत को कुछ हुआ है। तुम्हारी मम्मी ने ऐसा ही तो कहा था!"

"क्या मम्मी ने फोन किया था?" मार्दी ने चिन्ता भरे स्वर में पूछा।

"हाँ, बस तीन बार!" डॉक्टर ने बताया।

"ओह!" मार्दी ने कहा।

"ओह!" लिसबेत ने कहा।

"वे फिक्र कर रही थीं कि तुम दोनों गईं कहाँ?" डॉक्टर ने कहा, "उनको लग रहा था कि ज़रूर कुछ हुआ है।"

"हुआ था," मार्दी झेंपकर बुदबुदाई।

डॉक्टर ने मार्दी को कुर्सी पर बिठाया और उसकी नाक में रुई के दो गोले फँसा दिए। उसे देखकर लिसबेत हँस-हँसकर गिरने लगी।

"तू पागल-सी लगती है, मार्दी!" उसने कहा, "किसी घोंघे जैसी जिसकी नाक के आगे दो सफेद सींग होते हैं।"

लेकिन लिसबेत की बोलती अचानक बन्द हो गई। डॉक्टर ने एक डरावनी लगने वाली आँकड़ी उसकी नाक में डाली। उससे दर्द नहीं हुआ, पर गुदगुदी ज़रूर हो रही थी। पहले दाहिनी, फिर बायीं ओर, और फिर दाहिनी ओर!

"तुम्हें याद है, मटर किस तरफ डाला था?"

"इस तरफ!" लिसबेत ने दायीं ओर इशारा किया।

डॉक्टर ने फिर एक बार, ज़्यादा गहराई से उसमें आँकड़ी डालकर देखा। उससे और भी गुदगुदी हुई।

"चू! अजीब-सी बात है," उन्होंने कहा। "मुझे मटर कहीं नज़र नहीं आ रहा!"

"आएगा भी कैसे?" लिसबेत ने कहा, "वह तो मैटी से झगड़ा करते वक्त बाहर निकल आया था!"

पिप्पी, एमिल, मार्दी और कार्लसन के मज़ेदार कारनामे
लेखक: आस्ट्रिड लिंडग्रेन
अनुवाद: अरुंधती देवस्थले
प्रकाशक: एकलव्य व अरविन्द कुमार पब्लिशर्स
मूल्य: 170 रुपए

इस किताब को मँगवाने के लिए चकमक के पते पर चिट्ठी लिख सकते हो।

बच्चों और बड़ों का भरपूर मनोरंजन करने के साथ-साथ दुनिया भर की चहेती आस्ट्रिड लिंडग्रेन अपने लेखन से कुछ और भी करती हैं। बड़े लोग बच्चों से क्या अपेक्षा करते हैं और खुद कैसा जीवन जीते हैं? बच्चों की अपनी इच्छाएँ क्या हैं और वे आस्ट्रिड लिंडग्रेन के पात्रों पिप्पी और एमिल में कैसे साकार रूप लेती हैं? पिप्पी और एमिल दरअसल बच्चों की उन इच्छाओं का जीता-जागता रूप हैं जो मनोरंजन के साथ-साथ हमें बच्चों के भीतर की दुनिया में भी ले जाती हैं। आस्ट्रिड लिंडग्रेन के मन में बच्चों से अपार प्रेम का जो भाव है और उनके आत्मीय जगत को समझने की जो अद्भुत क्षमता है, यही उनके लेखन को इतना जानदार बनाता है। उनका लेखन बड़े लोगों का मज़ाक भी उड़ाता है, उन पर व्यंग्य भी करता है – उन लोगों पर जो अपने बचपन को अपने भीतर जीवित नहीं रख पाते, और इस तरह बच्चों को भी ठीक से समझ नहीं पाते। वे ही बच्चों से ऐसी अपेक्षाएँ करते हैं जिन्हें बच्चे कभी पूरा नहीं कर सकते और कोशिश करते हैं कि बड़े इस बात को जान ही न पाए।

गोताखोरी और नमक

प्रयोग सामग्री:
काँच का एक गिलास, पानी, तेल, नमक।

क्या करना होगा:
गिलास में तीन-चौथाई पानी भरो। पानी के ऊपर थोड़ा तेल उड़ेल दो। तेल की एक पतली-सी परत पानी के ऊपर तैरती दिखेगी। उस पर एक चुटकी नमक डालो। क्या हुआ?

ऐसा क्यों:
तेल की बूँद पानी में क्यों डूबती है? थोड़ी देर बाद तेल की बूँद तैरकर वापस तेल की परत में क्यों चली जाती है?

सोचने की बात:
तेल की परत पानी के ऊपर इसलिए तैरती है क्योंकि तेल का घनत्व पानी से कम है। नमक पानी और तेल से सघन है इसलिए वह पानी में डूब जाता है। डूबते वक्त नमक से चिपकी तेल की एक बूँद भी डूबती है। नमक तेल में नहीं घुलता है। पर थोड़ी देर में नमक पानी में घुल जाता है। अकेले तेल की बूँद पानी से हल्की है, इसलिए वह नमक से अलग होते ही तेल की परत में वापस चली जाती है।